भारत विभाजन पर आधारित उपन्यासों का परिचय

डॉ0 पुष्पा महाराज

प्रियम्बदा

स्वतन्त्र भारत का उदय विभाजन के साथ हुआ। यह प्रथम अवसर था, जब धर्म के नाम पर संस्कृति को बाँटने का प्रयत्न किया गया और कहा गया कि मुसलमानों के लिए एक पृथक् राष्ट्र 'पाकिस्तान' होगा। भारत ने धर्म निरपेक्ष स्वरूप अपनाया, जिसमें सभी धर्मों के लोगों को समान अधिकार दिये गये। विभाजन ने सदियों से साथ–साथ रहते लोगों के लिए अपना अलग राष्ट्र चुनने का विकल्प दिया था, जो व्यावहारिक स्तर पर बेमानी सिद्ध हुआ। विभाजन की विभीषिका के बाद भारत में हिन्दू–मुसलमान सम्बन्धों में नये आयाम देखे गये। ये आयाम सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्तर पर रेखांकित किये गये। हिन्दी के कई साहित्यकारों ने अपने उपन्यासों की कथावस्तु ऐसे वातावरण से ग्रहण की और इन सम्बन्धों के विविध रूपों को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया।

स्वतन्त्रता–प्राप्ति के बाद भारतीय उपन्यास परिदृश्य में हिन्दू–मुसलमान सम्बन्धों के दृष्टिकोण से अन्य कई उपन्यास महत्त्वपूर्ण हैं जिसमें देवेन्द्र सत्यार्थी का कठपुतली, नासिरा शर्मा का ठीकरे की मँगानी, जिन्दा मुहावरे, रामदरस मिश्र का जल टूटता हुआ, शिवप्रसाद सिंह का अलग अलग वैतरणी, गौरी शंकर कपूर का उल्का साकेत, राजीव कुमार का टुकड़े, भगवान सिंह का उन्माद, भगवाद दास मोरवाल कृत काला पहाड़, ज्योतिष जोशी कृत सोन बरसा, कमलेश्वर कृत कितने पाकिस्तान, असगर वजाहत कृत सात आसमान, कैसी आगी लगायी, अब्दुल बिस्मिल्लाह कृत मुखड़ा क्या देखे आदि प्रमुख हैं।